

四

五

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमः श्री गणेशाय नमः ॥
नमो आचार्यः ॥ कुरु दिः
कंगलाः यथा विदिना सद्य
मूय विष्णु ॥ ॐ अद्यादि ॥ मू
र्या दीं याय ॥ ऊऊ माननः
यूजा रवि ऊयक ॥ वाक् ॥

ऊय मानस वाक् यथाः य
थ प्रयथा नाम ध यथार्थ
न वाग्नि रुक् निमित्ति थैक
मूर्तुं श्री मूर्या ॥ अर्दी नमः ॥
मा हा न्य को नाया दि प्र नि
बुया नय यन ष्म नं या दि
मि द्वि नमः कृ या न या दि ॥
आचार्य धयू प्य हा ऊ नम
मर्थ या मि ॥ गु न नमः स्का
न ॥ ख उं ग न्या सु ॥ ऊ न
वा प्रयूजा ॥ अर्द्य वा प्रय
जा ॥ ॐ ख यूजा ॥ ॐ न ॥

द्वि आ नमः यूजा ॥ न ग उ द
क वलि विरे ॥ आक्ष ना
दि ॥ नेता स नाय या इका
यूज या मि नमः ॥ ॐ ऊ ऊ ऊ
ऊ ऊ य नाय या य ॥ वलि
गु ऊ र स्वा हा ॥ ऊ य ॥ आक्ष
ना दि ॥ आ ऊ लि ॥ वलि ३
ॐ ऊ ऊ ऊ ऊ कू ले य गु व रु क
ना भय य य यूजा ॥ वलि ॥
आक्ष ना दि ॥ ॐ मूखा से ना
य या य ॥ ॐ ऊ ऊ ऊ ऊ ग म
य ग य या य ॥ वलि ॥ रु रु
का दि ग र न या व लि गु ऊ
र स्वा हा ॥ ॐ स र्व वि च
कू म्भ या स र्व रु न या व
लि गु ऊ र स्वा हा ॥ ॥
धूयः दिवः ऊयः ऊ ॥ १०

श्रीकृ॥ १०॥ ग० ॥ १०॥ स्तु
त॥ रूपायुगायित्री वाग
यतिवन्दु कामागृकाया
गिनीति॥ कृष्णार्जुनाक
संस्थसकलयनिकलो
तिष्ठदवाग्यनाग॥ यका
॥ कृष्णार्जुनाक॥ यवनस
गगमलीकया लागमम
॥ सृष्टीवादी॥ समस्त॥ सव
लिविविर्धयागमनिके
नित्यं॥ अगुगन्धदि॥
असमन्तुनेवलिविस
ऊं न॥ केलखकायावे॥
त्रंगद्व॥ अकायरुट॥
कननेकृष्णार्जुनाकस्य
वियालखसुअनकलका
य॥ ॥ गंगाकलगाग्य॥

यूजा॥ नोहियत्र॥ अश्रुदि॥
सूर्योद्य॥ अगुनेसकाग॥
न्यासखतंगम॥ अलाजः
दीयागुयूजाः रूतसुद्धि
मयूजा॥ गंगाअसन॥ ॥
अश्वगसकनम॥
अनकासनायनम॥
स्कंदायनम॥
नानानायनम॥
यकायनम॥
यगायनम॥
कंगगायनम॥
कर्त्तृकायनम॥
धर्मायनम॥
ज्ञानायनम॥
अर्चनायनम॥
अर्चनार्थायनम॥

दुर्गात्रासिधय नमः॥
ॐ त्रिदिदम् लोकयो
लेश्यः नमः॥ अथ ह्ना
माद्य अथ चित्रजो विय
नमः॥ ॐ अ न नोद्य
एकूल नागना ऊयः न
मः॥ ॐ उगो न सादि सप
मवियः नमः॥ ॐ वृष
विष्णु उ सदा भि वयः
नमः॥ ॥ ॐ तिक लेभ
ई सः ॥ नगासु उ
युजा ॥ ॥ अथ नादि ॥
ॐ यन्ना सनाय नमः॥
यया ऊलि ॥ नृग ह ॥ अ
थ ह्ना दि अथ चिलं जि
व नो नमः॥ ॐ अथ
ह्ना माय नमः॥ वनेय

नमः॥ वासाय नमः॥
ह नमः नमः॥ विही
ब नाय नमः॥ कयाय
नमः॥ यत्र ह्ना माय न
मः॥ मार्क अय नमः॥
अथ ह्ना सादि अथ चि
लं जि विथान नमः॥ ॥
ॐ तिसगं श युजा ॥ ॥
नगाग ह्ना भ युजा ॥ अः
अनादि ॥ ॐ सेवा सना
यया युजा ॥ यया ऊलि ॥
गं गी गुं ग भय नय वा
युजा ॥ ॐ अथ मादाय न
मः॥ पुमादाय नमः॥
विद्यना जाय नमः॥
नं वी दनाय नमः॥ ह
स्ति मूषाय नमः॥ ग

ब्रह्माद्यादि नमः ॥ १ ॥
 त्रिकोणमात्रीयूजा ॥ २ ॥
 गोहृद्यादियूजा ॥ ३ ॥
 र्थाय नमः ॥ नायाय
 नमः ॥ तदा निवाय
 नमः ॥ गलय नय नमः
 ॥ कृष्टया लाय नमः ॥
 नागनायाय नमः ॥ हि
 मसनाय नमः ॥ सिव
 सकिं ह तसिद्धि विद
 वगार्थ नमः ॥ ह नमः
 नाय नमः ॥ ४ ॥ देव
 गार्थ नमः ॥ गृह लक्ष्मी
 नमः ॥ सांगाय संगद्य
 य निवा नाय नमः ॥ ॥
 ॥ त्रिश्वा विद्यायूजा ॥ ॥
 ॥ ओदर्य नाययायूजा ॥ ॥

[illegible]

न्याहं न वं न न सा म्म हं ॥
अहं न मथ ना न्य नो ह्म न हि
सु मा क का नि धी र्दु द्वा स
गृहा न चं वु न म वु न मू न
नं ॥ को मा नी म यू ना नू को
न का

अथ ईहिया सरदा म

कुह्या जो तं धते माल —
 ब्रह्मा नः पुसा स मे ते — १
 असकल स पुसा स म्यत् — ८
 ईनाय क पुसा स मे ते — १
 सता पा सु ती — १
 यक्ष यक्ष नी — २
 घनी तः नाग ध — २
 अतीः क ची नों च —
 यं वो द क स ना —
 क ची अया — ५०
 सती मा द्यो —
 पी चाः ती नी चा — २
 ती नी चा सु ती या — १
 जो हा साः रवे ना — १
 उ गः सु सी — ३
 स्व सी — ३२ त ने गु सी मा द्यो — १
 सी ता प्याः १ ती प्या २ प्रो की क
 थी मा को —
 को य ख ध च — १६
 हे रवी प मा को —
 वं ग ल सी हः पं ड हः व र हः अं ह
 ड वी र हः मा को —

अता सोः अता चो —
 वी मा —
 गु तु सु ती —
 ज्यो ना ल प ते मा को —
 पु तु पा त — २
 ह्या ड स्व त द्ध न व्र ह्या या — १
 नु यु स्व त द्ध नः ग ने स या — १
 हू च ची द्ध न — १
 ना ग द्ध न — १
 ध्व ती अ गु चा जो — ४
 व्र ह्या या त गा कु ह्या ड — ३
 ई ना या तु मु कु — १॥
 चा चु का य मा को
 ला सा पा — ४
 पा त का पाः १ मा ड का य ~~कु~~
 पंच य ताः क र्त्त य ता अ ड वा मा
 कोः पंच सु त्र का मा को —
 व्या स ती गो द्यो — १
 र व हः र व ह मा — १
 अ स मं ग ल चो या गु —
 प्रो की चो या गु सु ती —
 च क क नी — १

माध्वैः ३३ः ॥ प्राक्कोः-१

कलीः सायः ~~कलीः~~ — १

तायः यो तायः प्राको — १

इति: जजका भाको — १

ॐ बुधा कर्पुः प्राक्को — १

दाफोत्वाः कृत्वा माको

शत्रुर्हता वै सिः माध्वः वाध्वः

कुलकाक्षती

आसन की जाकी क— ३

आक्षेप ————— १

वाष्वाद्युग्जाकी माहरी—१

पुवाक — — — २

नष्टा क १

स्वावाः शूः कशुः माः कोतः न्वा

३ काः पन्नाः लकुश मोः सी

५. मूयुः तु मुहा माः द्वात्पुच

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय नमः

जता बालन ई कथा ————— १

श्रीकृतुः श्रीकृष्णः हृषिकेशः

यशकेसरः पल्लवाः श्रीयगुः

कुरुमः जज्ञमै सचीः अस्त

दसीः ऽवः ऽवयव

तुः लः सी सा क ल द को

तव वरी — ६० उवा ना माके

गवावे—२५ या गुं गवा ग्राही-१

तमोजोली

तलीचाः कसला

सुत-वारः पुनर्वा- -

पञ्चपात्रम्

०८ ची कुनी : चौ कुनी — १

वृत्ति सता ----- १

सीज बोला ————— ४

कंस बोला ————— ४

कोश—

मीलामुः ताहाय—

कंसभूता चो

धातुः स यत्नः —

सहाइः

अं घाँ ————— ३

कलसलीन प्रणवः

आवात यत्त भोव न या के

तायः प्रकृतः

...

१०४ गैरवादि यशविदे

3049

संस्कृत-
महाभारत-
पुस्तकालय

सम्बन्ध ८८१ माधवकृष्ण

५ स्वलि वी०४

म.

सम्बन्ध



सम्बन्ध ८८१

माधवकृष्ण

४ सो ज ४ सुखवत

सम्बन्ध ८८१

माधव

१०४ तैरवादि यशविदि

सम्बन्ध ८८१

3049





गनगुननागपुजायादक्षना—सुभी—द—१२
 कस्तुराहनायादक्षना—सुभी—द—१
 लनदक्षना—सुभी—ज—५
 वीपुजायादक्षना—सुभी—द—१२
 अह्नाचनदक्षना—सुभी—द—१२
 रनापुजायादक्षना—सुभी—द—१
 व्याचीनायादक्षना—सुभी—द—१२
 केनायादक्षना—सुभी—द—१
 उल्लाचनयाहातदक्षना—सुभी—ज—५
 इभापुजायादक्षना—सुभी—ज—५
 कन्यादानयादक्षना—सुभी—ज—५

क. मा. दा. न. बा. ट. ————— हा. सि. — ५ — x

सगविन्दकाद्या ॥
 १३५०६ कोशमय ॥
 आदिम — यानि ॥
 वसुधा — वि ॥
 आगम — वाक ॥
 वध — वनि ॥
 वरुणसि — मधु ॥
 स — स ॥
 वानिधन — को ॥
 गहि — गव ॥

१ कलशक्रियाकंथ ॥
 २ अथक्रियाक्रिया ॥
 ३ यथालोकः ॥
 ४ मन्त्र — अथान्तर ॥
 ५ अथ ॥
 ६ कलशः ॥
 ७ यामलः ॥
 ८ कृत् ॥
 ९ अथ ॥

अथ — गाय ॥
 अथ — अन्तर ॥
 अथ — अथ ॥

सप्तलोकासुनासुपा४। सुसि यक्राश्वगभर्वा४पञ्चमवसवसु५॥ १॥
 सिवसुमगीचाप. सुगीवाश्वव्यामर्क। रुभट्कालुगसुसि, रुगम्भ
 मश्वतुद्विष४॥ १॥ रुगम्भमश्विनीसुसि वीनडा४ कलगासु५॥
 सुसि वदाश्वमसुसि मयगीव्यादगीग५॥ २॥ सुसि नोगाप्रगाती
 सखानांमानवश्वव। श्वावाश्वश्रुक्रियासुसि, सुसि यक्रश्वसर्वदा॥ ३॥
 मरुतसि वगसुसि, सुसि दगाश्वश्वव। यज्ञमानसुसि दगासुसि

२० अकि॥

रुक्मरुसर्वदेवगा४॥ इति सुसि वाक् सप्तमं॥ ४॥

कसुदममम॥ ५॥ गसिरवमश्वनीः सनवनीसंममसिद्धि क
 नीशकर्मः सनकिन्नर्मः सनिदवकिन्ननगार्मः संप्रजिगा
 सर्वदा॥ ६॥ गमीषं वककहिं कानकटिगदपन्यागामा
 कयागाश्वसगगंनमसि सिसासक्रीपुदाश्वजला
 धूसनयाश्वसंकिन्नग१६ गकि॥ दुक्रयाश्वसंकिन्नग२६ गक्ष
 एङ्गग१५ दुक्रया॥ धूसलया एङ्गगाम६ गसिन्नग२६ निन्नया

२० अकि॥

